❋ 26 जून 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

❋ ज्ञान-

1] बाप को याद करना है तब ही तुम पतित से पावन बन सकेंगे।

2] बाप के साथ अति प्यार रहे, वह अतीन्द्रिय सुख भासता रहे। जब तुम बाप की याद में लग जायेंगे तब ही तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। फिर तुम्हारी खुशी का पारावार नहीं रहेगा। इन सब बातों का वर्णन यहाँ होता है इसलिए गायन भी है– अतीन्द्रिय सुख गोप-गोपियों से पूछो, जिनको भगवान् बाप पढ़ाते हैं।

❋ योग-

1] मीठे बच्चे– पहले हर एक को यह मन्त्र कूट-कूट कर पक्का कराओ कि तुम आत्मा हो, तुम्हें बाप को याद करना है, याद से ही पाप कटेंगे।

2] बाप तुम बच्चों को भी कहते हैं चलते, फिरते, उठते बाप को याद करते रहो।..... भल चक्र लगाओ, घूमो फिरो, बहुत रूचि से बाप को याद करो।

3] याद से ही तुम्हारी कर्मातीत अवस्था आयेगी। तुमको स्वदर्शन चक्रधारी बनना है।

❋ धारणा-

1] अपने को आत्मा समझो तो बेड़ा पार है। याद करते-करते पवित्र दुनिया में पहुँच ही जाना है। यह शब्क कम से कम 3 मिनट तो घड़ी-घड़ी पक्का करना है।

2] पहले-पहले यह मन्त्र पक्का करना हैं– अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो तो धनके बन जायेंगे।

3] मैं सिक्ख हूँ, फलाना हूँ.... यह छोड़ एक बाप को याद करना है। पहले-पहले तो बुद्धि में यह मुख्य बात बिठाओ। वह बाप ही पवित्रता, सुख, शान्ति का वर्सा देने वाला है। बाप ही कैरेक्टर्स सुधारते हैं।

4] बाप कहते हैं– बच्चे, अब तुम्हें पूरा-पूरा श्रीमत पर चलना है श्रेष्ठ बनने के लिए। हम यही सेवा करते हैं। ईश्वरीय मत पर चलो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। बाप की श्रीमत यह है कि मामेकम् याद करो।

5] भगवानुवाच– मुझे याद करो तो पाप भस्म होंगे।..... मन-बुद्धि को सब तरफ से हटाकर एक तरफ लगाना है। जो कुछ इन आंखों देखते हो उनसे बुद्धियोग हटा दो।

6] शिवबाबा को याद कर भोजन बनाओ तो खाने वालों की बुद्धि शुद्ध हो जायेगी।

7] बाप का परिचय देने से ही बाप को जितना याद करेंगे तो तमोप्रधान से सतोप्रधान बनेंगे।

8] श्रेष्ठ भाग्य की रेखाओं को इमर्ज करो तो पुराने संस्कारों की रेखायें मर्ज हो जायेंगी।

❋ सेवा-

1] भारत जो पतित बन गया है, उसे पावन बनाना– यही सच्ची सेवा है। लोग पूछते हैं तुम भारत की क्या सेवा करते हो? तुम उन्हें बताओ कि हम श्रीमत पर भारत की वह रूहानी सेवा करते हैं जिससे भारत डबल सिरताज बनें। भारत में जो पीस प्रासपर्टी थी, उसकी हम स्थापना कर रहे हैं।

2] अब बच्चे जब सर्विस करते हैं तो पहले-पहले ही उनको अल्फ पढ़ाना है। जब भी कोई आये तो शिवबाबा के चित्र के आगे ले जाना है, और कोई चित्र के आगे नहीं। पहले-पहले बाप के चित्र के पास उनको कहना है– बाबा कहते हैं अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। मैं तुम्हारा सुप्रीम बाप भी हूँ, सुप्रीम गुरू भी हूँ। सबको यह पाठ सिखलाना है।

3] पहले-पहले यह जरूर समझाना चाहिए– अपने को आत्मा समझ मामेकम् याद करो।

4] बाप के परिचय में भल 5 मिनट लग जायें, हटना नहीं है।

5] परिचय देना है– बाबा सुप्रीम बाप है, सुप्रीप टीचर, सुप्रीम गुरू है। तीनों ही कहने से फिर सर्वव्यापी की बात बुद्धि से निकल जायेगी।

6] तो बाप समझाते हैं मूल एक बात पर ही खड़ाकर समझाना है। पहले-पहले अल्फ, अल्फ को समझ जायेंगे फिर इतने प्रश्न आदि कोई पूछेंगे नहीं।